International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 7 | July 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.111

# गंगा यमुना दोआब क्षेत्र के भाषायी विकास पर भूगोल का प्रभाव

**डॉ0 आनन्द प्रकाश[1], डॉ0 पंकज कुमार[2]**
[1]असि0 प्रो0 (भूगोल विभाग) धनौरी पी0जी0 कालेज, धनौरी, हरिद्वार
[1]**Email:** anandsharma99973@gmail.com
[2]असि0 प्रो0 (भूगोल विभाग) जे0वी0 जैन कालेज, सहारनपुर
[2]**Email:** drpankajgeography@gmail.com

**Received:** 01 July 2026 | **Accepted:** 09 July 2026 | **Published:** 14 July 2026

## Abstract (सारांश)

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र की उपजाऊ मिट्टी, उपयुक्त जलवायु तथा सांस्कृतिक समपन्नता ने विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के विकास और परम्परा, प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। गंगा यमुना दोआब क्षेत्रों के मध्य स्थित यह क्षेत्र विभिन्न धर्मो और संस्कृतियों के सम्पर्क में रहा है, जिसके कारण इस क्षेत्र में भाषाई विविधता को निरन्तर बढ़ावा मिलता रहा है। गंगा यमुना दोआब क्षेत्र की भौगोलिक विविधताओं ने न सिर्फ यहॉ की भाषाई विविधताओं को संरक्षण दिया है, अपितु क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ बनाया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दोआब क्षेत्र के भाषाई विकास पर भौगोलिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना है। यह शोध–पत्र क्षेत्र की भाषाई, सांस्कृतिक तथा क्षेत्रीय भूगोल के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा।

**मुख्य शब्दः–** गंगा यमुना दोआब, सांस्कृतिक विविधता, भाषाई विविधता, भौगोलिक कारक

## प्रस्तावना

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र अनेक संस्कृतियों का संगम है व गंगा यमुना संस्कृति का अनूठा प्रतीक है। विविधता तथा जियो और जीने दो का व्यावहारिक स्वरूप यहां की पहचान है। यहाँ का लम्बा और गौरवपूर्ण इतिहास वास्तव में राष्ट्रीय एकीकरण और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का परिचय देता है। यहाँ बौद्ध, जैन, इस्लाम, सिख व सतातन सभी धर्मों क अनुयायी एक साथ रहे और एक दूसरे के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन को प्रभावित एवं समृद्ध करते रहें। यहाँ के विचारों और जीवन शैली का प्रभाव वेशभूषा, खानपान, भाषा, बोली, संगीत, कला, वास्तुकला, आदि पर भी पड़ा। यह दोआब क्षेत्र साधु–संतो, सूफियों, शिल्पियों, कवियों, संगीतज्ञो व शायरो की जन्मभूमि रहा है। यहाँ की संस्कृति ने एक ऐसी मानसिकता को जन्म दिया है, एक ऐसी विचार शैली दी है, एक ऐसा जीवन दर्शन दिया है, जिसने न सिर्फ पूरे उत्तर प्रदेश राज्य अपितु सारे देश को अपनी ओर आकृष्ट किया है। यह कहना अतिश्योक्ति होगी कि इस दोआब प्रदेश में विश्व कल्याण के सभी तत्व मौजूद हैं।

**अध्ययन का उद्देश्यः–** प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. दोआब क्षेत्र की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विशेषताओं का अध्ययन।
2. दोआब क्षेत्र के प्रमुख भौगोलिक कारकों का विभिन्न भाषाओं के विकास पर प्रभाव।
3. दोआब क्षेत्र की प्रमुख भाषाओं का अध्ययन।
4. दोआब क्षेत्र में भाषाई विविधता का अध्ययन।
5. आधुनिकीकरण का दोआब क्षेत्र की भाषाओं पर प्रभाव का अध्ययन।
6. दोआब क्षेत्र की विभिन्न भाषाओं और बोलियों के संरक्षण के सुझाव और योजना।

## विविध तन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। द्वितीय, ऑकड़ों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। जिसमें विभिन्न प्रमाणिक पुस्तकें, शोध–ग्रन्थ, शोध–पत्र, जनगणना रिपोर्ट, भारत सरकार के विभिन्न प्रकाशन समाचार पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों पर उपलब्ध सांख्यिकीय ऑकड़ें आदि को आधार बनाया गया है। प्राप्त ऑकड़ों का वर्गीकरण तथा तुलनात्मक विश्लेषण की किया गया है।

## भौगोलिक परिचय

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह दोआब उत्तर में सहारनपुर जनपद से प्रारम्भ होकर पूर्व में इलाहाबाद जनपद के पश्चिमी भाग तक अपना विस्तार रखता है। इस दोआब क्षेत्र की उत्तर से दक्षिण पूर्व की कुल लम्बाई 740 किमी0 तथा अधिकतम चौडाई दोआब क्षेत्र के मध्य भाग में 120 किमी0 है। पश्चिम से पूर्व की इसकी चौडाई गंगा यमुना नदियों के समीप आने के कारण कम होती जाती है तथा प्रयागराज नगर के दक्षिण पूर्वी भाग में गंगा और यमुना का संगम हो जाता है। सम्पूर्ण दोआब क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 54315 वर्ग किमी0 है, जो उत्तर प्रदेश राज्य का 23 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश राज्य के कुल 75 जनपदों में से 26 जनपदों पर गंगा यमुना दोआब का विस्तार है जिसमें से 20 जनपदों का सम्पूर्ण भाग दोआब क्षेत्र मध्य में स्थित है, जबकि कौशाम्बी, फर्रूखाबाद, इटावा जनपदों का अधिकांश भाग, मथुरा जनपद का लगभग 40 प्रतिशत एवं आगरा और प्रयागराज जनपदों का आंशिक भाग इस दोआब क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित है। यमुना नदी जो जनपद सहारनपुर के रहना गाँव के निकट सहारनपुर में प्रवेश करती है इसकी पश्चिमी और दक्षिणी सीमा, तथा गंगा नदी जो मुजफ्फरनगर के रामशिवाय गाँव के निकट मुजफ्फरनगर में प्रवेश करती है इसकी पूर्वी तथा उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार गंगा यमुना दोआब क्षेत्र की कुल जनसंख्या 5.85 करोड़ है, जिसमें 3.16 करोड़ पुरूष तथा 2.67 करोड़ स्त्रियाँ हैं।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

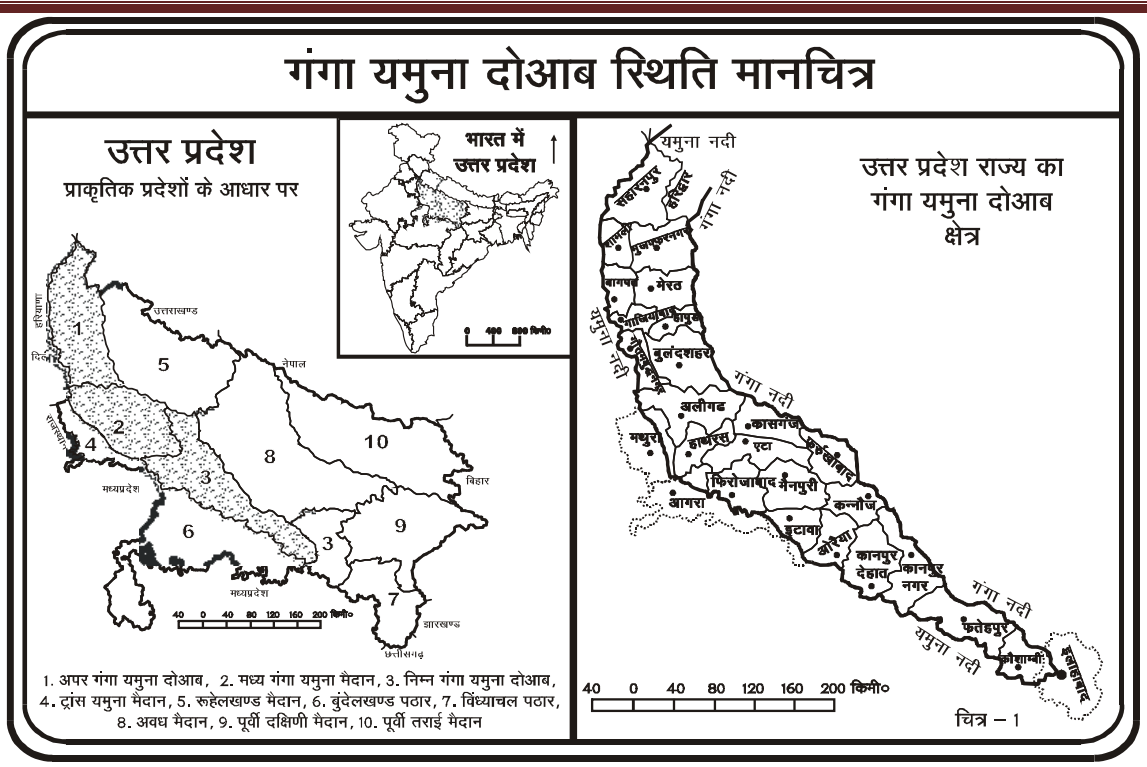


**गंगा यमुना दोआब क्षेत्र में भाषाई वर्गीकरण**

| भाषाई क्षेत्र | प्रमुख जनपद | प्रमुख भाषा/शैली |
|---|---|---|
| ऊपरी दोआब | सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद | खड़ी बोली, हरियाणवी |
| मध्य दोआब | हापुड़, बुलन्दशहर, अलीगढ़, गौतमबुद्ध नगर | खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा |
| मध्य आबाद (ब्रज क्षेत्र) | मथुरा, आगरा, हाथरस, फिरोजपुर, एटा तथा कासगंज | ब्रजभाषा |
| ऊपरी निम्न दोआब | मैनपुरी, फर्रूखाबाद, कन्नौज, इटावा तथा औरेया | कन्नौजी |
| निचला निम्न दोआब | कानपुर, फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रयागराज (आंशिक) | अवधी |

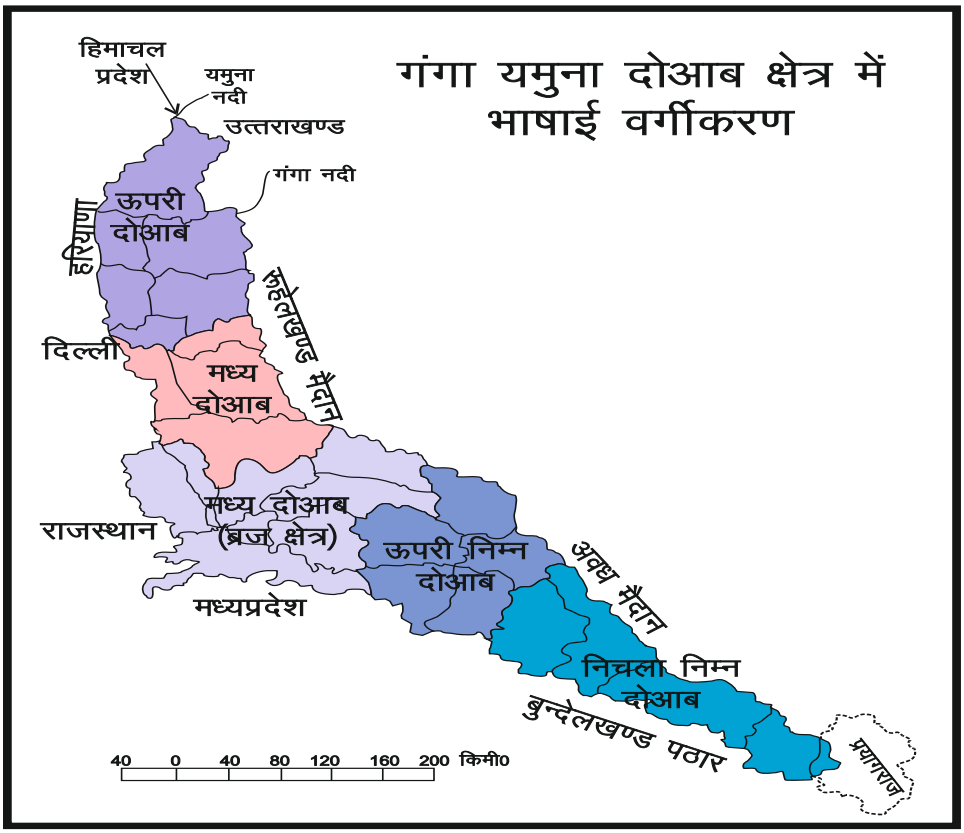

## भाषायी विकास में भूगोल की भूमिका

किसी भी क्षेत्र की भाषाओं के विकास, प्रसार और आपसी सम्बंधों को समझाने में भूगोल एक महत्वपूर्ण कारक है। गंगा यमुना दोआब क्षेत्र जिसमें पहाडी क्षेत्र, विभिन्न नदियाँ, घाटियाँ तथा मैदानी क्षेत्र सम्मिलित है। भाषायी और सांस्कृतिक गतिविधियों के विकास में सहायक रही है। अध्ययन क्षेत्र के मध्य भाषायी संबंधों के भूगोल ने अत्यन्त ही गहनता से प्रभावित किया है। भाषा के विकास में न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है अपितु क्षेत्र के भौगोलिक कारक भी यह दर्शाते हैं कि कैसे एक भाषा दूसरी भाषा का आधार तैयार करती है। गंगा यमुना दोआब क्षेत्र अनेक भौगोलिक कारकों द्वारा अनेक भाषाओं को प्रभावित किया है जिसके प्रमुख कारक निम्न प्रकार हैं–

## जनसंख्या वृद्धि और भाषा

गंगा यमुना दोआब उत्तर प्रदेश राज्य का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ अनेक सभ्यता और संस्कृतियों का संगम है। गंगा– यमुना दोआब संस्कृति का एक अनूठा प्रतीक है। यहाँ की उपजाऊ भूमि व अनुकूल जलवायु ने जातीय और जनजातीय समुदायों को अपनी ओर आकर्षित किया है, जिससे उनके इन क्षेत्रों में बसने के कारण यहाँ की भाषाओं और बोलियों का मिश्रण स्थानीय भाषाओं के साथ हो गया है। परिणामरूपरूप हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का भी विकास हुआ है।

## जीवनदायिनी नदियों का प्रभाव

गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र की सतत् वाहिनी गंगा और यमुना दोनों प्रमुख नदियाँ न केवल सांस्कृतिक रूप से अपितु भौगोलिक रूप से भाषायी आदान–प्रदान का माध्यम रही है। प्राचीन काल से ही नदियों के किनारे बसे नगर जैसे हरिद्वार, मथुरा, कानपुर, प्रयागराज भाषाओं के विकास के केन्द्र रहे हैं, जिसके कारण यहाँ हमेशा से ही बोलचाल की भाषा में परिवर्तन होता रहा है।

## कृषि आधारित जीवन शैली का भाषा पर प्रभाव

प्राचीन काल से ही दोआब क्षेत्र की आजीविका का मुख्य स्रोत यहाँ की उपजाऊ भूमि रही है। दोआब क्षेत्र की भाषा शैली पर कृषि से सम्बंधित शब्दावली का गहरा प्रभाव पड़ा है। खेत–खलिहान, गाय–बैल, भैंस, प्राचीन कृषि उपकरण, मजदूरी आदि से जुड़े अनेकों शब्दों का प्रयोग यहाँ की भाषा में प्रमुखता से हुआ है। यहाँ की भाषायी अभिव्यक्ति में कृषि के साथ–साथ प्राकृतिक रूप से जुडे अनेक शब्दों तथा मुहावरों का भी समावेश हुआ है।

## व्यापारिक गतिविधियों का भाषा पर प्रभाव

प्राचीन काल से ही गंगा यमुना नदियों का उपयोग व्यापार मार्गों के रूप में होता चला आ रहा है। न सिर्फ भारत अपितु विश्व के अनेक क्षेत्रों से आने वाले व्यापारी तथा शिल्पकारों ने दोआब क्षेत्रों में प्रवेश किया और अपनी भाषाएं लेकर आये तब उन व्यापारिक समुदायों के कारण ही हिन्दी भाषा में पहाडी, पंजाबी, अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं के शब्द सम्मिलित हुए। सहारनपुर, मेरठ, अलीगढ, मथुरा, कानपुर, प्रयागराज जैसे व्यापारिक केन्द्रों पर मिश्रित भाषायी संस्कृति विकसित होती चली गयी।

## प्रवास का भाषायी विविधता पर प्रभाव

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र प्राचीन समय से ही व्यापार को आवागमन के अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों वाला क्षेत्र रहा है। यहाँ समय–समय पर अनेक समुदायों का प्रवास होता रहा है। आर्यों के आगमन से संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जिसके कारण आधुनिक हिन्दी भाषा विकसित हुई। यह क्षेत्र विभिन्न राजवंशों (मौर्य वंश, गुप्त वंश, मुगल काल तथा ब्रिटिश काल) के अधीन रहा है। इन शासकों के काल में इस क्षेत्र में भारी संख्या में जनसंख्या का प्रवासन हुआ। जैसे उदाहरण के लिए मुगल काल के समय इन क्षेत्रों में अरबी, फारसी और उर्दू के शब्द जुडे और उर्दू भाषा का विकास हुआ। ब्रिटिश काल में अंग्रेजी भाषा के शब्द हिन्दी भाषा में सम्मिलित होते चले गये।

## धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता का भाषायी विविधता पर प्रभाव

दोआब क्षेत्र की उपजाऊ भूमि ने जहाँ एक ओर कृषि को स्थायित्व प्रदान किया। वहीं यह क्षेत्र धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ विभिन्न समुदायों और परम्पराओं का संगम हुआ है। भक्ति आन्दोलन के अनेक संत जैसे तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास आदि द्वारा अपनी रचनाओं में भजनों के माध्यम से लोक भाषाओं को सशक्त बनाया, जिससे अनेक क्षेत्रीय भाषाओं का उदय हुआ।

## आधुनिक परम्पराओं का भाषायी परिवर्तन पर प्रभाव

आधुनिक नगरीयकरण और औद्योगिककरण के कारण हिन्दी भाषा का प्रभाव बढ़ता रहा है, जिससे स्थानीय भाषाओं जैसे खडी बोली, अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा में निरन्तर परिवर्तन आ रहा है। आधुनिक शिक्षा पद्धति, मीडिया और सरकारी नीतियों के कारण क्षेत्रीय भाषाओं की अपेक्षा मानक हिन्दी का विस्तार हो रहा है। जबकि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग साहित्य और धार्मिक संदर्भों तक ही सीमित होता जा रहा है।

## निष्कर्ष

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र भारत की समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक भूमि है। विविधिता और विकास की दृष्टि से यह एक आदर्श क्षेत्र रहा है। गंगा यमुना दोआब की भाषायी विविधता और विकास में भूगोल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यहाँ की प्राकृतिक धरोहर नदियाँ, कृषि, व्यापार, प्राचीन परम्पराएं, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधिता, प्रवासन और राजनीतिक घटनाएं इस क्षेत्र को प्रभावित करती रही है। दोआब क्षेत्र में खडी बोली, अवधी, ब्रज भाषा, कन्नौजी तथा भोजपुरी जैसी अनेक भाषाओं का विकास हुआ, जो आज भी अपनी जीवन्त अवस्था में है। यद्यपि आधुनिक समय में यहाँ हिन्दी और अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ा है। परन्तु प्रारम्भिक बोलियों ने भी यहाँ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखा। अतः गंगा यमुना दोआब क्षेत्र का भूगोल और भाषाएं एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते है। वर्तमान और भौगोलिक परिस्थितियों में समय के साथ–साथ इनका प्रभाव और बढ़ता नजर आ रहा है।

## सन्दर्भ


[1]. बंसल, एस0सी0, उत्तर प्रदेश का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2014–15

[2]. मिश्र, प्रसाद बलदेव, भारतीय संस्कृति, रामनारायण लाल बैनी माधव, इलाहाबाद–1966

[3]. गुप्ता सत्या, खड़ी बोली का लोक सहित्य, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद–1965

[4]. बंसल एस0सी0, पर्यटन भूगोल, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2025

[5]. योजना, कला और संस्कृति विशेषांक, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मन्त्रालय मार्च–2024

[6]. त्रिपाठी के0एन0, उत्तर प्रदेश एक समग्र अध्ययन, बौद्विक प्रकाशन, इलाहाबाद 2016–17

[7]. महेन्द्र, जे0, भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रतियोगिता दर्पण विशेषांक, 2012

[8]. तिवारी एवं अन्य, उत्तर प्रदेश तथ्य सार, समसामयिक घटनाचक्र, अतिरिक्तांक, 2017
[9]. उत्तर प्रदेश का मानचित्र, सर्वे ऑफ इण्डिया, प्रथम संस्करण, 1975
[10]. ओझा एस0के0 (निदेशक) उत्तर प्रदेश 2016, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0, लखनऊ, 2016
[11]. भारतीय जनगणना विभाग, 2011

***Cite this Article:***

*आनन्द प्रकाश, पंकज कुमार. (2026). गंगा यमुना दोआब क्षेत्र के भाषायी विकास पर भूगोल का प्रभाव. International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(7), 01–04.*

***Journal URL:*** *https://ijhce.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.111*